रिकॉर्डः–तुम्हारे बुलाने को जी चाहता है.... ॐ पिताश्री 28/6/62
ओमशान्ति। सिर्फ बच्चे नहीं बुलाते हैं, बाप भी बुलाते हैं, बाप भी बुलाते हैं; क्योंकि जो अच्छे बच्चे हैं ज्ञान डांस कर जानते हैं, उन्हों के लिए बाप भी चाहते हैं कि ...त आवें। बादल आते सागर ज़रूर चाहता होगा। सागर बादलों को बुलाते हैं, आकर रिफ्रेश होकर जाओ। जैसे– बाबा ज्ञान डांस करते हैं। तुम भी सीखो। रिफ्रेश होने वाले बच्चे ..... आओ। रिफ्रेश हो फिर जाए रिफ्रेश करो। सुनकर बा... सुनाओ। क्या सुनाओ जो बाबा ने बोर्ड पर लिखाया है झूठी गीता और सच्ची गीता पर। न सिर्फ गीता वादियों ने; परन्तु इन वेद आचार्यों आदि सबने बिल्कुल झूठा बनाए दिया है। समझाना है ये सब भक्तिमार्ग है वा साधना मार्ग है। साधु साधना करते हैं भगवान से मिलने लिए। जो कुछ ..... करते हैं वा गंगा स्नान करते। वो अपन को शिवोहम् वा भगवान कहलाए नहीं सकते। अगर कोई कहे अंत में वहाँ जाकर हम भगवान से मिलेंगे। तो भी यहाँ तो अपन को भगवान कह नहीं सकते। बाप समझाते हैं तुम्हारी पहली मुख्य बात है ये समझाने की। तुम और कितने भी बातें करेंगे; परन्तु इतना नहीं सुनेंगे जबकि ..... न लगे। बाबा ने समझाया है तुम लिख दो तुम न सिर्फ गीता; परन्तु वेदों–शास्त्रों के लिए भी लिख सकते हो। बाबा ने तो सिर्फ लिखा है मनुष्यों की बनाई हुई गीता झूठी है; परन्तु तुम सबके लिए लिख सकते हो वेद–शास्त्र–उपनिषद आदि सब झूठे हैं। बरोबर साधना तो करते ही आए हैं। ऐसे तो है नहीं कोई साधना करते भगवान से मिला हो। कहते हैं ये शास्त्र आदि सब अनादि हैं; परन्तु कोई ने तो बनाई होगी। ऋषियों–मुनियों ने बनाई होगी। देवताओं ने तो नहीं बनाई। बनाया है मनुष्यों ने। जो रहते आए हैं। मनुष्यों की मत की बनाई हुई है इनसे सदगति होती ही नहीं। अगर होते तो ..... जन्म में सद्गति हो जानी चाहिए। फिर जन्म–जन्मांतर क्यों पढ़ते आते। ये तो सद्गति ..... दुनिया को और ही दुर्गति में पहुँचाया है। भक्ति से दुर्गति ही होती है। तमो..... भक्ति बननी है। ये तो तुम जानते हो भक्ति कब से शुरू हुई है। दुनिया इन बातों को .... जानती। जैसे कोई कारीगर होते हैं तो वो अपने हुनर का अन्त देने नहीं चाहते हैं; क्योंकि समझते अगर यह सीख जावेंगे तो हमारी वैल्यु कम हो जावेगी। यह चीज़ बनाने सीख जावेंगे। तो मैं ... फायदा निकालता हूँ वो कम हो जावेगा। ऐसे कई होते हैं। कोई तो फिर समझते हैं भल ...भी सीखें। सीखकर फायदा ले ऐसे भी होता है। अभी यह शास्त्र तो कोई भी सीख सकते हैं, पूछ सकते हैं। उनसे सद्गति की बात होती तो क्यों फिर पढ़ने आते। शास्त्र तो आगे भी पढ़े ....; परन्तु सद्गति को तो कोई पाते नहीं। तो समझाना चाहिए कि भारत को वा दुनिया को दुर्गति में आना ही है। जड़–जड़ीभूत होना ही है। साधना करने वाले कभी सदगति दे न सके। सदगति करने वाला एक है। गाते भी हैं पतित–पावन; परन्तु वो कौन है यह नहीं जानते। कृष्ण भी हो न सके ..... हो सकता। पतित–पावन है ही एक, जो ज्ञान का सागर, शान्ति का सागर है। जिसको .... भी कहा जाता है। रुद्र यज्ञ भी रचते हैं। रुद्र गीता ज्ञान यज्ञ भी रचते हैं। गीता ..... ज्ञान नहीं रहता है। तो रुद्र ज्ञान यज्ञ वा रुद्र यज्ञ रचते हैं। तो वहाँ अनेक प्रकार के ..... रखते हैं। अभी थोड़ा हंगामा हुआ था। स्टार्स मिले थे तो यज्ञ रचे थे। वहाँ सभी शास्त्र रखे थे आजू–बाजू ..... का मुरबा कहते हैं ना। समझते हैं बस, यह ज्ञान है। इन शास्त्रों द्वारा हम भगवान को जाकर मिलेंगे; परन्तु भक्ति है ही दुर्गति। दुर्गति की .....ती है साधना ..... गंगा स्नान करना। और तुम बच्चे कॉन्ट्रास्ट में हो। तुम कुछ भी भक्ति नहीं करते हो। कहाँ ... ... आदि पर जाते नहीं हो। तुम्हारे मुख से हे भगवान, हे राम भी नहीं निकल सकता।

हे राम किया तो नापास हुए। समझेंगे ज्ञान नहीं है। हे शिव भी नहीं कहना है। यह भी भक्ति का उच्चारण है। तुमको मुख से कुछ भी कहना न है। कहते हैं ना माला जपी बुद्धि का योग न लगाया। यह भी अन्दर ..... की बात है। इसमें मुख नहीं चलना है। अन्दर में शिव का उचारण भी मुख से किया तो नापास हो जावेंगे। कायदे पर चलना है। बाप का फरमान है मुझ पारलौकिक बाप को याद करो। बच्चे बड़े होते हैं तो बाबा2 मुख से कहते थोड़े ही रहते हैं। बुद्धि में आ जाता है। सिर्फ कहना नहीं है। भगवान त्रिमूर्ति है। ब्र०वि०शं० द्वारा स्थापना, विनाश, पालना कराते हैं। यह तो किसको सुनाने लिए समझाया जाता है। तुमको तो चलते–फिरते, उठते–बैठते बुद्धि में ..... में है। बाबा है, ... स्वीट होम है। स्वीट राजधानी है। श्वासों श्वास याद रहने से विकर्म विनाश होंगे। लाइट का ताज मिलेगा; परन्तु ज्ञान का चक्कर बुद्धि में फिरना चाहिए। हम मास्टर चैतन्य बीजरूप है। जैसे शिवबाबा ने इसमें अवतार लिया है। शिव के साथ शिव शक्तियों का भी अवतार है। आत्माएँ शिवबाबा के बच्चे हैं। यह अंदर में चलना है। हमारा घर ब्रह्माण्ड है अथवा मूलवतन कहो। ब्रह्माण का अर्थ क्ली.... निकलता है। ब्रह्म तत्व में अण्डे रहने वाली। वास्तव में अक्षर एक होना चाहिए; परन्तु समझाने लिए मूलवतन अथवा इनकारपोरियल वर्ल्ड कहा जाता है। वर्ल्ड अक्षर से सिद्ध है ज़रूर बहुत रहने वाले हैं। यह है साकारी वर्ल्ड। जहाँ साकारी जीव आत्मा रहती है। निराकारी दुनिया से आत्माएँ आती हैं। ऐसे नहीं कि सागर में बुदबुदा निकलता है तो फिर हप हो जावेंगे। यह तो वर्ल्ड है। जैसे साकारी सृष्टि का झाड़ आकाश तत्व के अंश मात्र में है, वैसे हम निराकार आत्माओं का भी झाड़ ब्रह्म महातत्व के अंशमात्र में है। यहाँ तो स्थूल शरीर में रहने–करने, आने–जाने लिए बड़ी जगह चाहिए। बहुत जमीन भी चाहिए। वहाँ तो आना–जाना नहीं पड़ता तो ज़मीन भी बहुत छोटी चाहिए। महातत्व में हम आत्माएँ बहुत थोड़ी जगह में रहती हैं। जैसे आकाश का अंत नहीं होता। पोलार का .... थोड़े ही होता है। कोई जा नहीं सकते। तो अंत नहीं। हमको ब्रह्म तलाश करने की दरकार नहीं पड़ती। यह तो भल ....च करते हैं। .... तत्व कहाँ तक है। अंत कब निकलेगा नहीं। फिर उनको जानने की तो बात ही नहीं। हम ..... का अंत पाए सकते हैं। कहते हैं ईश्वर तो समर्थ है, कुछ भी कर सकते हैं। कहते हैं उनको वो ड्रामा है। सबको अपना2 पार्ट मिला हुआ है। फर्क पड़ नहीं सकता। ईश्वर का भी पार्ट फिक्स है। एक्टर्स छोटे अथवा बड़े जो भी हैं उनको मालूम तो होना चाहिए कि इस ड्रामा में हम एक्टर हैं। तो ड्रामा में ज़रा भी फर्क नहीं पड़ सकता। ड्रामा की आदि–मध्य–अंत को जानने से सबकुछ जान जावेंगे। वो है पारलौकिक परमपिता। तो बाप और बच्चों के पार्ट की नूँध है। हरेक (को) पार्ट मिला हुआ है। .. .. समझाते हैं तो ज़रूर जानते हैं। पिता कहते हैं तो बच्चों को ज़रूर ..... होना चाहिए। यह प्वाइंट भी ज़रूरी है जबकि बना–बनाया ड्रामा है .... ज़रूर रचता और रचना का पार्ट नूँधा हुआ है। दोनों का पार्ट फिक्स है जो रिपीट करना पड़ता है। आओ तो हम आपको ..... की बायोग्राफी बताएँ। उनको जानने से सब एक्टर्स को जान जावेंगे। ऐसा एक्टर कौन है ..... होगा जो ड्रामा के एक्टर्स को न जानता हो। ऐसे हो नहीं सकता। सन्यासी लोग ड्रामा को नहीं मानते। कल्पना कह देंगे। जैसे उस दिन जज ने भी कहा, तुम कहते हो शास्त्रों में गपोड़े हैं। हाँ, ज़रूर ..... के गपोड़े होंगे; परन्तु शास्त्रों में तो जिन्होंने गपोड़े बनाए हैं वो अभी हैं नहीं। लिखकर चले गए। उन गपोड़ों पर मनुष्य चलते हैं। हम तो मेज़नर(मेनेजर) बैठे हैं। हर एक बात को आकर समझो। हम ..... बताए सकते हैं उन्होंने कैसे सब झूठ लिखा है। कहते भी है प० ट्रूथ है तो वो सच ही बतावेंगे। हम ..... बात उनसे पूछ सकते हैं। आगे थोड़े ही हम जानते थे। दूसरी बात की जो भी

गुरु लोग हैं उन सबके गुरु ज़रूर हैं। हम कहते हैं हमारा मनुष्य गुरु कोई है नहीं। आये तो थे ज़रूर; परन्तु अब नहीं है। जो सारी सृष्टि का पतित–पावन है वो ही हमारा सद्गुरु है। सदगति दाता तो एक है। हम वेद–शास्त्र पढ़ते थे। गुरु को मानते थे, अब इनको नहीं मानते हैं; क्योंकि अभी सदगति दाता सद्गुरु मिला है। वो हमको जो समझाते हैं सो हम आपको समझाते हैं। वो बाबा ज्ञान का सागर, आनंद का सागर, बीजरूप है। वो लोग अपने गुरु की इतनी महिमा नहीं करेंगे। वे गीता का भगवान ही कहते हैं मैं मनुष्य सृष्टि का बीजरूप हूँ। कृष्ण तो भगवान वा मनुष्य सृष्टि का बीजरूप हो न सके। ..... के लिए कहे तो भी ठीक है; क्योंकि उन द्वारा सृष्टि रचते हैं; परन्तु ब्रह्मा को भी बीजरूप नहीं कह जाता। निराकार प॰ कहते हैं मैं जिस तन में आता हूँ उनका नाम ब्रह्मा रखता हूँ। मोक्ष कोई बाप ..... गुरु नहीं। सन्यासियों का तो बाप, टीचर, गुरु होगा। 5 बरस में थोड़े ही कोई निकलते हैं। थोड़ा बड़ा होने बाद, समय आने बाद ही निकलते हैं। कई अपने धर्म में कनवर्ट करते हैं तो उनको पैसे बहुत ...ते हैं। पैसे के लालच में ही ट्रान्सफर हो जाते हैं। तो सिर्फ तुम बच्चे ही हो जो कहते हो हमारा एक ही बाप, टीचर, गुरु है। हम साकार के लिए तो भगवान कहते नहीं। वो है निराकार परमपिता। उनका कोई गुरु नहीं है। उनको रचने वाला कोई नहीं। हम उनसे सुनकर आपको सुनाते हैं। ..... का चित्र देख समझते हैं ये अपन को भगवान कृष्ण आदि कहलाते हैं। सिर्फ चित्र से भी कोई समझ न सके। चित्र का आक्युपेशन, बायोग्राफी पूरी होनी चाहिए। अभी बहुत कुछ लिखना भी है। दिलवाला मंदिर की भी बहुत तारीफ लिखनी है। ये है सबसे बड़ा तीर्थ। ये सारी संगठन का यादगार है। उनकी महिमा बहुत निकालनी है। हमारी क्रियेशन एडीशन तो चलती ही रहेगी। इसलिए लिखते रहते हैं किताब ऐसा बनाओ जो हम कब भी एड कर सकें। तो अब तुम बच्चियाँ जानती हो रत्नागर, जादूगर, मुरलीधर कोई कृष्ण नहीं है; परन्तु संगम समय होने कारण शिव और कृष्ण को .... किया है। गीता से पैदा हुआ कृष्ण। गीता ने हमको राजधानी दी। राजाई भगवान ही दे सकते हैं। मूर्ख बात है ये कि गीता का भगवान ही भारत को वर्सा देते हैं। संयासी थोड़े ही देते। सन्यासियों का ..... अभी और ही बढ़ता जाता है। कोई एक को पूछते तो बस वो बच्चा बनाकर ..... वो जो कुछ कहे सो कर देते। ज्ञान को तो जानते ही नहीं। साधुओं ने देखो कैसे गुलज़ारी ..... है। बड़ा है तो इनको बचाते रहते हैं। तुम भी कोई को पूछो। इन साधुओं ने ही भारत को दुर्गति को पहुँचाया है। भल केस होंगे वो तो अच्छा ही है; परन्तु ताकत नहीं कोर्ट में ..... रखे। पहले तो वकील करना पड़े वा कोई अच्छा बच्चा हिम्मत रथ केस करे। प्वाइंट्स की धारणा भी हो...। इस.... में तो एक जगदीश ही तीखा है; परन्तु डरपोक है। अजन वो ताकत न आई है। .... इनमें ज्ञान की एक .... है। बच्चे2 कहकर बोल सकते हैं, जैसे बाबा बच्चे2 कह बात करते हैं। कोई ....ताते हैं तो कहते मम्मा को मिलना चाहिए। मम्मा सामने बिठा बच्चे2 कह समझावे। नाम ही ब्रह्मा

का लगा हुआ है। तो जगत अम्बा मिल सकती है। बच्चों को पहले माँ मिलती है, फिर बाप। पहले जिज्ञासु को अटैण्ड करने वाले बहुत अच्छे चाहिए। जैसे गाय मनुष्य को सींग पर उठाती है। तुम भी ज्ञान गाय हो। एकदम सींग पर उठाओ। तुमको ये भी पता नहीं है आत्माओं का बाप का नाम क्या है? उस बेहद के बाप को याद नहीं करते हो? तुम रचना को बैठ याद करते हो, उनसे वर्सा क्या मिलेगा। इतनी हिम्मत चाहिए बात करने की। बाबा बच्चे2 तो माँ–बाप ही कह सकेंगे। तुम तो नहीं कहेंगे। पूछना चाहिए युक्ति से कि तुम जगत अम्बा का नाम कब सुना है? वो कौन है? किसके तो बच्चे होंगे फिर बैठ समझाना चाहिए। यह समझ तब आती जब विचार–सागर–मंथर करे। नहीं तो वो समझ आवेगी नहीं। सवेरे उठ विचार–सागर–मंथन करना है। अब युक्तियाँ आई न है इसलिए समझा जाता है अब तक ड्रामा में ऐसे ही पार्ट है। अभी तक वो शक्ति धारण न हुई है; क्योंकि ठीक से याद न करते। पूरा योग न होगा तो तीर लगेगा नहीं। वाणी खुलेगी नहीं। बाबा समझ जाते हैं किसका योग ठीक है। बाबा भी बहुतों को मदद करते हैं। कोई2 बच्चे सच बतलाते हैं मेरे में ऐसी मुरली चलाने की ताकत न थी। पता नहीं मेरे से किसने मुरली चलवाई। सुनने वाले भी फील करते हैं। तो बाबा बहुत मदद करते हैं। कई बच्चे फिर समझते हमने अपनी होशियारी दिखाई। देह अभिमान आ जाता है। बाबा को भूल जाते हैं। बाबा प्वाइंट्स तो बहुत देते रहते हैं। धारणा न होती है; क्योंकि योग में नहीं रहते हो। बाबा की याद में रहो तो कब मुरझाइश न आए। साजन अथवा पिता कोई कम थोड़े ही है। बाप से बड़ा भारी खजाना मिलता है। तो तुम समझा सकते हो सन्यासियों का भी ड्रामा में पार्ट है। बाकी वे सदगति नहीं कर सकते। खुद साधना करते रहते हैं। शिवोहम् कहते हैं तो फिर साधु नाम न होना चाहिए। मैं शिव हूँ, फिर साधना किसकी? साधना अथवा भक्ति कोई से मिलने लिए करनी होती है। प्वाइंट्स तो तुमको बहुत देते हैं। उनमें हिमत्त चाहिए। अच्छी रीत 8 ही उठावेंगे, फिर 108 भी हैं। अच्छी रीत 8 नम्बर वालों की ही ताकत काम करेगी। नाम तो सुनते रहते हो कौन2 हैं– कुमारका है, गंगे है, मूमली(मनमोहिनी) है। एक दिन वो भी आवेगा जो सभी बच्चे एक जगह मिलेंगे क्लास में। सबसे खुश–खैरियत पूछेंगे। ब्राह्मण कुल भूषण वाले आपस में ज़रूर मिलने अनन्य बच्चों का मिलन होना चाहिए तो मालूम पड़े। मिनिस्टर की गवर्नर्स की कॉनफ्रेन्स होती है ना। यहाँ भी अनन्य बच्चों की कॉनफ्रेन्स क.....नी पड़ेगी। फिर हरेक बतावेंगे हम अपने ..... से क्या2 सर्विस करते हैं। यह भी गवर्नमेन्ट है ना; परन्तु यह है गुप्त। मकान बन जावेगा फिर सभी अनन्य को बुलावेंगे जो सेन्टर चलाने वाले अ.... होंगे। अभी तो बहुतों का आपस में मतभेद है। बाबा के बच्चों को माया भी छोड़ती नहीं। यह भी ड्रामा में नूँध है। ब्राह्मणकुल में मतभेद न हो फिर तो रेल बहुत तीखी चले। देखा जाता है रेल को बहुत धीरे2 चलना है। अब अजन पैसेंजर हैं। फिर एक्सप्रेस होगी, फिर मेल ट्रेन होगी। धीरे2 वृद्धि को पाते जावेंगे। तो तुम बच्चों ने एक/दो मुख्य प्वाइंट सिद्ध कर दी तो कमाल हो जावेगी। आस्तिक–नास्तिक वाली प्वाइंट भी ज़रूरी है। वेद–शास्त्र–उपनिषद कराने .....भक्ति सभी का नाम भल डालो। वेद–शास्त्र–कुरान–बाइबल सभी सुनते2 मनुष्य नास्तिक बने हैं। कहते हैं– ईश्वर सर्वव्यापी है, तो नास्तिक ठहरे ना। इसमें डरने की बात नहीं। कोई भी केस करे। तुम सिद्ध कर बताओ। इन शास्त्रों ने कैसे नास्तिक बनाया है। हाँ, बहादुर सिपाही बीड़ा उठाने वाला हो, जो कहे बाबा हम सिद्ध कर बतावेंगे। ..... तो बहुत मिलेगी। तुम्हारी बड़ी2 लिस्ट होनी चाहिए। जो कल्प पहले किया है वो अब भी करना है। ललकार तो करेंगे ना। बाप–दादा भी ललकार करेंगे– बच्चे, कुछ करके दिखाओ। शिकारियों में भी नम्बरवार होते हैं। कोई तीर–कमान चलाते हैं, कोई बन्दूक चलाते हैं। फिर इन्हों की आपस में शर्त रहती है– उड़ते हुए पंखी को तीर लगावें। पंखी भी एक ही होगा। ऐसा तीर चलावेंगे जो .... उनके पेट में लग जावेगा। एक ..... पंखी उड़े एक को ही लगे। फिर जिसका लगे

उनको इनाम। कोई एक बन्दूक से 5/6 पंछी भी मारते हैं। तुम भी अभी छोटे शिकार करते हो। फिर सन्यासियों का शिकार करता है। भगवानुवाच्य है– इन गुरु–गोसाई ने तुमको दुब्बण में फँसाया है। उनका ..... गाये। पहले मुख्य बात है ही गीता। भई, कोई2 गुस्सा करेंगे, गाली भी देंगे। वो तो सहन करना ही है। तुम जो कुछ करते हो सो अपने लिए। माया पर जीत पाए तुम ही स्वर्ग के मालिक बनते हो। वो सिपाही बादशाही के लिए करते हैं। लड़ाई वालों पर कोई पाप नहीं लगता है तो पाप राजाओं पर लगता है; क्योंकि वो डायरैक्शन देते हैं। चोर को जो राय दते हैं तुम ऐसे2 करो तो उनको भी मज़ा मिल जाती है। चोरी करने वाले को तो बचाना चाहिए ना कि ऐसा काम न करो। ऐसे नहीं देखते रहें, भल करते रहे। बुरे काम में राय भी देते हैं उसका पाप बहुत लगता है। तुम बच्चों को पुण्यात्मा बनना है। माया से बड़ी संभाल रखनी पड़ती है। ज्ञान में जो एक्युरेट होगा वो बड़ा तीखा दौड़ेगा। हर बात में पूछना चाहिए बाबा इसको पाप कहा जाय है। समझाया जाता है 13/14 बरस में जो किया है उसका पाप दाखिल नहीं होता है। बालिग ..... होने से ही पाप नूँध जाते हैं। बाप से पूछो यह2 पाप किये हुए हैं। बाबा इनको पाप कहे? तो शंका मिटा... लाइन क्लीयर होनी चाहिए। ..... न है। बाबा सभी खोलकर बतलाते हैं तो बच्चे को को भी लिखना चाहिए। नई2 बीमारी आवेंगी। कहेंगे ज्ञान में आने से दिवाला मारो, दुकान ठण्डा हो गया। फिर संकल्पों में घुटका खाते रहेंगे। बाबा कहते हैं संकल्प आए तो पूछो। बाकी बहुत मौज में रहना है। क्रियेशन को संभाल... भी है। बाबा से वर्सा भी लेना है। एक/दो को सावधान भी करना है। तरस आना चाहिए। गाली तो देंगे ही। ....को भी गाली मिली ना। अब कृष्ण को थोड़े ही कोई गाली दे सकता। वहाँ ऐसे बदमाश आदि कोई होते ही नहीं। यह है ही बदमाशों की दुनिया। अपन पास अक्षर आदि बहुत गुल2 मीठे निकलने चाहिए। .... को समझाया तो बहुत अच्छा जाता है– उन्नति के लिए कृपा आदि मांगना भूल है। यहाँ तो पढ़ना और पढ़ाना है। सच्चा व्यास बनना है। सुखदेव के बच्चे ब्राह्मण। ब्राह्मण ही व्यास होते हैं। यहाँ तो सभी शूद्र हैं। कह देते ईश्वर सर्वव्यापी है। बस खेल ही खलास हो गया। बस एक ही बात सिद्ध कर बताओ। बहुत ..... हुआ है। उनको समझाने में मेहनत लगती ....। ॐ